शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिंदी साहित्य के पितामह : आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

बृजेन्द्र कुमार (शोधार्थी)
हिंदी विभाग
पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय
शिलांग, मेघालय, भारत

शोध संक्षेप

हिंदी साहित्य में ज्ञान की कालजयी पत्रिका 'सरस्वती' के यशस्वी संपादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के कृतित्व को हिंदी साहित्य में एक युग के नाम से परिभाषित किया गया है और उस युग को नाम दिया गया है- द्विवेदी युग। प्रस्तुत शोध पत्र में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर पुनर्विचार किया गया है।

प्रस्तावना

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म 9 मई 1864 ई. को उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के दौलतपुर गाँव में हुआ था। हिंदी साहित्य कोश (भाग-2 के अनुसार- इनके पिता रामसहाय द्विवदी को महावीर का इष्ट था, इसीलिए उन्होंने अपने पुत्र का नाम महावीर रखा।) इनकी प्रारंभिक पाठशाला गाँव की पाठशाला में हुई। प्रधानाध्यापक ने भूल से इनका नाम महावीर प्रसाद लिख दिया। हिंदी साहित्य में यह भूल स्थायी बन गई।"1 तेरह वर्ष की आयु में अंग्रेजी के अध्ययन के लिए रायबरेली के जिला स्कूल में महावीर प्रसाद ने प्रवेश लिया। यहाँ संस्कृत विषय के अभाव में इन्हें फारसी लेना पड़ा। एक वर्ष यहाँ अध्ययन करने के पश्चात उन्नाव जनपद के रंजीत पुरवा स्कूल और कुछ दिनों तक फतेहपुर के जिला स्कूल में महावीर प्रसाद ने अध्ययन किया। इसके बाद महावीर प्रसाद मुंबई चले गए। मुंबई में स्वाध्याय से इन्होंने संस्कृत, गुजराती, बंगला और मराठी भाषा का ज्ञान अर्जित किया।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने आजीविका के लिए रेलवे की नौकरी को स्वीकार कर काफी समय तक नागपुर और अजमेर में रेलवे की सेवा की। उसके बाद पुनः मुंबई आ गए। यहाँ उन्होंने तार देने की विधि सीखी और रेलवे में सिग्नलर हो गये। रेलवे में विभिन्न पदों पर कार्य करने के पश्चात झाँसी में रेलवे-उच्चाधिकारी से न निभ पाने के कारण इन्होंने रेलवे की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की साहित्य-साधना रेलवे के नीरस वातावरण में भी चल रही थी। इस समयावधि में द्विवेदी जी द्वारा संस्कृत ग्रंथों के अनेक अनुवाद और आलोचनाएं प्रकाश में आ चुकी थीं।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और 'सरस्वती'

सन् 1903 ई. में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने मासिक पत्रिका 'सरस्वती' का संपादन स्वीकार किया। जिसकी परिणति ने इनको हिंदी गद्य साहित्य का युग-विधायक बना दिया। 'सरस्वती' के संपादक के रूप में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी के उत्थान के लिए जो कार्य किये, उन

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कार्यों पर कोई भी साहित्य गर्व कर सकता है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का व्यक्तित्व सुधारवादी था। जिसके कारण द्विवेदी युग नैतिकता, मर्यादा और सुधारवाद की प्रवृत्तियों से प्रभावित हुआ। इनके व्यक्तित्व में उस समय का पूरा युग ही सिमटकर मूर्त हो गया था। आचार्य द्विवेदी ने भाषा के क्षेत्र में स्वयं अपना भी परिष्कार किया। अन्य लेखकों की भाषा का सुधार करने में तो कभी-कभी आपको समूचा निबंध स्वयं लिखना पड़ता था।2 इस संबंध में पत्रकार-शिरोमणि बाबू विष्णुराव पराड़कर जी का यह वक्तव्य दृष्टव्य है- "सन् 1906 ई. में जब मैंने स्वयं पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया। प्रतिमास 'सरस्वती' का अध्ययन करना मेरा एक कर्तव्य हो गया। मैं 'सरस्वती' देखा करता था संपादन सीखने के लिए।"3 कहने की आवश्यकता नहीं कि आचार्य द्विवेदी की प्रेरणा और प्रोत्साहन के फलस्वरूप अनेक नई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन-प्रकशन तो आरम्भ हुआ ही। साथ ही प्रतिभा-संपन्न अनेक संपादकों, रचनाकारों और पत्रकारों का उदय भी हुआ। 'सरस्वती' पत्रिका के अनेक लेखक और पाठक आगे चलकर यशस्वी संपादकों और साहित्यकारों की श्रेणी में स्थापित हुए इनमें - मुंशी प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', शिवपूजन सहाय, पं. रामनरेश त्रिपाठी, मुकुंदीलाल श्रीवास्तव, यशपाल, बालकृष्ण शर्मा नवीनय आदि प्रमुख हैं।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी संपादन के इतिहास में जो कीर्तिमान स्थापित किये, उन्हीं के परिणामस्वरूप साहित्य-सृजन की उच्छृंखलताओं का नियमन संभव हो पाया। 'सरस्वती' की संपादकीय-टिप्पणियों में हिंदी संबंधी आंदोलन, हिंदी क्षेत्र की बदलती मनोदशाएँ और दृष्टिकोण, देश एवं समाज की तत्कालीन सांस्कृतिक अवस्थाओं का जीवंत इतिहास अभी भी सुरक्षित है। जिसे देखकर यह पता चलता है कि हिंदी साहित्य के संपादक-साहित्यकार किस निर्भयता, तटस्थता और तीक्ष्ण दृष्टि से देश और समाज की गतिविधियों का विवेचन कर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते थे। जब आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन अपने हाथ में लिया, उस समय हिंदी और अंग्रेजी की पत्र-पत्रिकाओं की पहुँच जन सामान्य तक नहीं थी। इस समयावधि में हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं के संपादकों एवं प्रकाशकों का कोई अभीष्ट लक्ष्य भी निर्धारित नहीं था। यह सब देखकर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को कष्ट का अनुभव हुआ और उनके मन में 'सरस्वती' पत्रिका को साहित्यिक पत्रकारिता की सर्वोत्कृष्ट पत्रिका बनाने की अभिलाषा उत्पन्न हुई। आचार्य द्विवेदी द्वारा 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन हाथ में लेते ही सरस्वती की पाठक-संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि आरम्भ हो गयी थी, जो हिंदी जगत में इनकी बढती लोकप्रियता का प्रमाण था।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने विपरीत और कठिन परिस्थितयों में भी सत्य का साथ नही छोड़ा, जिसके कारण हिंदी के अनेक साहित्यकारों और पत्रकारों से अनेक बार वैचारिक मतभेद भी हुआ। इन्होंने 'सरस्वती' में प्रकाशित महेंद्रलाल गर्ग की 'हमारी देह' की नकल पर 'जमाना' तथा इस तरह के संदर्भ में नकलची उर्दू पत्रों को कड़ी फटकार लगाई।4 इससे यह स्पष्ट होता है कि आचार्य द्विवेदी साहित्य और पत्रकारिता के इतिहास में गलत परंपरा नहीं पड़ने देना चाहते थे। द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' के पाठकों को हिंदी साहित्य एवं पत्रकारिता की वस्तुस्थिति से

अवगत कराने का सफल प्रयास किया। इसके लिए आचार्य द्विवेदी ने देश-विदेश के साहित्य और पत्रकारिता से संबद्ध विशिष्ट उन्नति को भारतीय परिप्रेक्ष्य में रखकर अपेक्षाकृत और अधिक समुन्नत करने का प्रयत्न किया। अपनी शोधपरक दृष्टि से हिंदी साहित्य और पत्रकारिता के उत्कृष्ट उत्थान से सम्बंधित समस्त संभावित बिन्दुओं को खोजकर अपनी टिप्पणियों तथा विचारों के माध्यम से उन्हें यथेष्ट आयाम प्रदान किया। "इंग्लैंड और अमेरिका में संपादकीय-स्कूल खुलने की सूचना देने के पीछे आपकी मंशा भारत में भी पत्रकारिता-प्रशिक्षण की शिक्षा की आवश्यकता पर बल देना था।"5 आचार्य महावीर प्रसाद हिंदी साहित्य के पहले विद्वान थे, जिन्होंने सबसे पहले 1904 में पत्रकारों के शिक्षण-प्रशिक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया था। तब उनकी इस सलाह पर कोई खास ध्यान नहीं दिया गया। हमारे देश में आजादी के काफी पहले (सन् 1941 ई.) में लाहौर में पत्रकारिता की शिक्षा के लिए पहली बार विभाग खुला और विधिवत पढाई शुरू हुई। सन् 1947 ई. के बाद देश के विभाजन के साथ यह विभाग भी भारत आ गया।"6 अब यह विभाग पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में है। उसके कुछ वर्षों बाद नागपुर में हिस्लाप कालेज में पत्रकारिता के अध्ययन की कक्षा खोली गयी। इसके पश्चात धीरे-धीरे पत्रकारिता-प्रशिक्षण के लिए विविध विश्वविद्यालयों-शैक्षिणिक संस्थानों ने कार्यक्रम आरम्भ किये।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रयासों से हिंदी साहित्य और पत्रकारिता की उन्नति के लिए आवश्यक अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण हो रहा था। यह द्विवेदी जी का ही प्रभाव था कि पाठकों और लेखकों में हिंदी साहित्य और पत्रकारिता के लिए कुछ कर गुजरने की अभिलाषाएं पनप रही थीं। ऐसे समय में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के अथक प्रयासों तथा कठिन अध्यवास ने रंग दिखाया और देखते-देखते हिंदी के साहित्य और पत्रकारिता को आगे बढ़ने का आन्दोलन चल पड़ा। आचार्य द्विवेदी की संपादकीय टिप्पणियों और समीक्षाओं से प्रेरणा तथा प्रोत्साहन ग्रहण करके प्रतिस्पर्धात्मक ढंग से साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन आरम्भ हुए। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इन नये प्रकाशनों की पत्र-पत्रिकाओं में त्रुटियों की ओर संकेत करके हिंदी भाषा का परिमार्जन तो किया ही साथ ही 'सरस्वती' को हिंदी साहित्य और पत्रकारिता का मुख्य केंद्र बना दिया। हिंदी साहित्य के प्रखर विद्वान आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कथन है- "यदि द्विवेदी जी न उठ खड़े होते तो जैसी अव्यवस्थित और व्याकरण विरुद्ध ऊटपटांग भाषा चारों ओर दिखाई पड़ती थी, उसकी परंपरा जल्दी न रुकती।"7

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने ब्रिटिश शासन से कभी सीधे लड़ाई नहीं लड़ी। यह हिंदी साहित्य के संवर्द्धन हेतु द्विवेदी जी की योजना और दृष्टिकोण का एक अंग था, इसीलिए द्विवेदी जी ने राजनीति पर सबसे कम टिप्पणियां लिखी हैं। आचार्य द्विवेदी इस तथ्य से अच्छी तरह अवगत थे कि शासन का प्रत्यक्ष विरोध करने पर 'सरस्वती' के प्रकाशन में बाधा उत्पन्न हो सकती है, जिसके परिणामस्वरूप 'सरस्वती' का प्रकाशन बंद हो सकती है। इसीलिए आचार्य द्विवेदी ने शासन का विरोध करने के स्थान पर देशवासियों को शिक्षित करने पर अधिक बल दिया। द्विवेदी जी इस तथ्य से अच्छी तरह भिज्ञ थे कि शिक्षित होने पर व्यक्ति में राष्ट्रीय भावनाओं के अंकुर के स्फुरण की संभावना प्रबल होती है। यह

सर्वविदित है कि आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी अगर उस समय अपनी दूरदृष्टि का उपयोग न करते तो देश में शैक्षणिक चेतना का वातावरण बनने में अनेक बाधाएं आतीं। इस संबंध में स्वयं आचार्य द्विवेदी का कथन दृष्टव्य है- "जो भारतवर्ष निरक्षरता की गर्त में इतना धंसा हुआ है, वह फ्रांस, इंग्लैंड, अमेरिका, जर्मनी और जापान के समाचार पत्रों की बराबरी कर भी तो नहीं सकता। यहाँ की प्रजा मूर्खता में डूबी हुई है। वह यदि पत्रों की कदर न करे तो आश्चर्य की कोई बात नहीं। यहाँ तो हमारी गवर्नमेंट भी देशी भाषाओं के समाचार पत्रों की कदर नहीं करती। उन्हें प्रकशित रिपोर्ट आदि देने तक की दया नहीं दिखाती।"8

निष्कर्ष

दिसम्बर 1920 ई. तक 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन करने के उपरान्त आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने संपादन से अवकाश ग्रहण कर लिया। इनकी आजीविका के लिए "इंडियन प्रेस के स्वामी चिंतामणि घोष ने 50 रुपये मासिक पेंशन की व्यवस्था कर दी।"9 वर्ष 1921 से 1929 ई. तक आचार्य द्विवेदी 'सरस्वती', 'आज, 'माधुरी'और 'सुधा' जैसी अनेक पत्र-पत्रिकाओं में अपने और छद्म नामों से लेखन करते रहे। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को हिंदी के साहित्यकारों-पत्रकारों ने हिंदी के प्रथम आचार्य के रूप में सम्मानित किया। आचार्य द्विवेदी हिंदी साहित्य और पत्रकारिता के जगत में हिंदी के पितामह की तरह पूज्य माने जाते हैं। संपूर्ण हिंदी जगत युग-प्रवर्तक आचार्य के रूप में इनका स्मरण करता है। सरस्वती पत्रिका के संपादन से विरत होने के पश्चात इनका अधिकांश समय निजग्राम दौलतपुर (रायबरेली) में व्यतीत हुआ। द्विवेदी जी का अंतिम समय अर्थाभाव, शारीरिक और मानसिक कष्टों के साथ व्यतीत हुआ। 21 दिसम्बर 1938 ई. को इनका देहावसान हो गया और हिंदी साहित्य का यह सूर्य सदैव के लिए अस्त हो गया।

संदर्भ ग्रन्थ

1 हिंदी साहित्य कोश (भाग-2, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा (सं.), पृष्ठ 438

2 हिंदी का गद्य साहित्य, डॉ. रामचंद्र तिवारी, पृष्ठ 494

3 पराड़कर जी और पत्रकारिता, लक्ष्मीशंकर व्यास, पृष्ठ 318

4 आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और साहित्यिक पत्रकारिता, इंद्रसेन सिंह पृष्ठ 88

5 आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और साहित्यिक पत्रकारिता, इंद्रसेन सिंह पृष्ठ 89

6 हिंदी पत्रकारिता: दशा और दिशा, जयप्रकाश भारती (सं.), राधेश्याम शर्मा का लेख 'पत्रकारिता: प्रशिक्षण और समस्याएं', पृष्ठ 27

7 विचारकोश, रामचंद्र शुक्ल, पृष्ठ 137

8 सरस्वती, महावीर प्रसाद द्विवेदी (सं.), मई 1914, पृष्ठ 84

9 पत्रकारिता के युग निर्माता: महावीर प्रसाद द्विवेदी, सुशील त्रिवेदी, पृष्ठ 23